अभिमन्यु वध

कविता कोश

• अध्यात्म • हास्य व्यंग • विसंगतियां
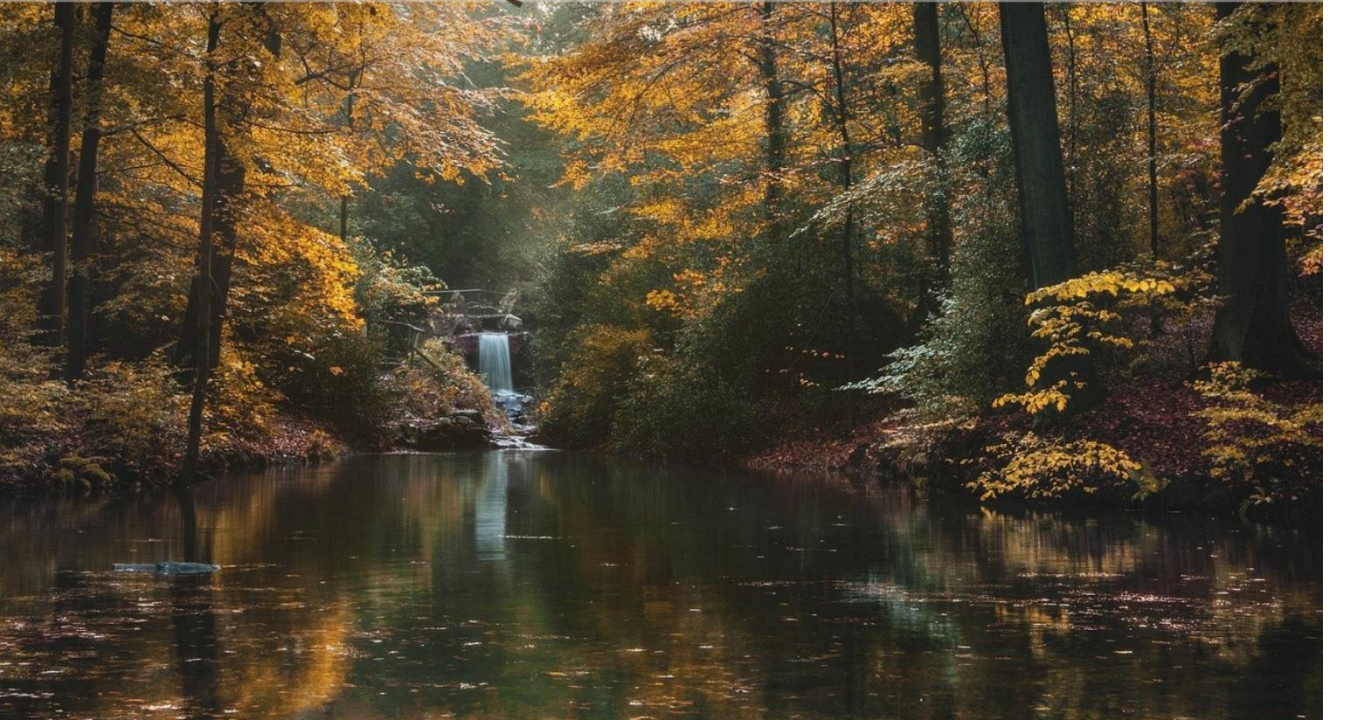
सुरेश (809 789 3453)

skgakoli@gmail.com

अनुक्रमणिका

1	अध्यात्म	जगत्पति श्रीराम	4
2	अध्यात्म	मन की गहराई	5
3	अध्यात्म	तलाश आशियाने की	6
4	अध्यात्म	नारी	7
5	अध्यात्म	भक्ति बुद्धि और विवेक हर लेती है	8
6	अध्यात्म	सत्यं वद, प्रियं वद	10
7	अध्यात्म	ज्ञान का भार	12
8	अध्यात्म	अष्टावक्र का आत्मज्ञान	21
9	अध्यात्म	नचिकेता का आत्मज्ञान	24
10	अध्यात्म	डर (खौफ)	25
11	पुरातन कथा	अभिमन्यु वध	26
12	पुरातन कथा	बाँसुरी का जादूगर	27
13	पुरातन कथा	सबल का अत्यचार	29
14	विसंगति	रामायण में महाभारत	30
15	विसंगति	झूठ की फैक्ट्री	31
16	विसंगति	व्यापार का अतिरेक	33
17	विसंगति	नेताजी	35
18	विसंगति	मुद्दा कहीं खो गया	37
19	विसंगति	नया रामराज्य	38
20	हास्य	लालू हो गया लाल लाल	39
21	हास्य	कुँवारे का सपना	40
22	व्यंग	ट्रम्प को राष्ट्रपति बना दो यारो	41
23	व्यंग	पूंछ अटक गयी	42
24	व्यंग	पूछता है भारत	44
25	व्यंग	नितीश का वनवास	45
26	व्यंग	बिहार राज्य के चिराग	46
27	व्यंग	आर्थिक आजादी	47
28	व्यंग	महिमा	49
29	व्यंग	एक घरवाली एक बाहरवाली	51
30	व्यथा	नया लोकतंत्र	53

31	व्यथा	रावण आज भी जिंदा है	55
32	व्यथा	फोबिया	56
33	व्यथा	नेताजी सुनिए	58
34	व्यथा	गुनाह	59
35	व्यथा	एक श्रधांजलि और	60
36	व्यथा	समाज की उम्मीद	61
37	व्यथा	रंगमंच	62
38	व्यथा एकांकी	एक जज का दर्द	63

1. जगत्पति श्रीराम

नमो नमो इष्टदेव गुरुदेव,नतोऽहम् विद्या वरदायनी।
आशीष मिले हर शुभ कार्य मे, जगत्पति श्रीराम की।
हिन्दू धर्म के आधार स्तंभों में एक हुए प्रभु श्रीराम।
मर्यादा पुरुषोतम केवल वे कहलाये भगवान श्री राम।

मनुपुत्र इक्ष्वाकु के रघुकुल में अवतरित हुए श्री राम।
आदर्श चरित्र प्रस्तुत कर एक सूत्र में बांधा समाज।
भारत की कण कण में बसे, आत्मा है प्रभु श्रीराम ।
राम नाम अति सुंदर है, इसकी महिमा है अपरंपार।

रामकीर्ति गायी वाल्मीकि ने रचा महाग्रंथ रामायण।
गोस्वामीजी ने रामचरितमानस रचा बसे अवधधाम।
चौदह वर्ष का वनवास गुजारा सन्यास जीवन जीया।
अंतिम दो वर्ष सीता माता की खोज में भ्रमण किया।

श्रीराम की सेना सजा रामेश्वरम की ओर कूच किया।
लंका चढ़ाई के पहले शिवलिंग बना शिवपूजन किया।
नलनील ने समुद्र पर पुल बनाकर रामसेतु नाम दिया।
विजय पा रावण पर, उसके अभिमान का नाश किया।
फहरा विजय पताका, हरा अधर्म,धर्म का काज किया।

****

2. मन की गहराई

अजीब सा खेल ये मानव मन की गहराई है।
तालाब किनारे बैठकर लहरों से खेलो कभी।

एक कंकर फेंक, शांत पानी में हलचल करो।
किनारे तक चलते, लहरों के वर्तुल को देखो।

लहरे उठती रही, किनारे तक चलती रही ।
धीरे धीरे मद्धिम हो, ये लहरे थमती गयी।

जीवन का फलसफा,लहरों में छिपा कहीं।
शांत जीवन के तालाब से खेल रहा कोई।

समस्या का कंकर मन की सतह से टकराता ।
कर मन को उद्दलित, लहरों के वर्तुल बनाता।

लहर मन के किनारे टकराती और चली जाती।
तीन सात दिन में मन संतुलन मद्धिम लौटाती।

पंद्रह से बाइस दिनों में मन शांत हो जाता।
कोई कंकर फिर मन को आंदोलित कर जाता।

अनवरत सा यह सिलसिला ऐसे चलता जाता।
अनजान वर्तुल जीवन को,उद्दलित कर जाता।

खोजो इस खेल को ध्यान के पलों में कभी।
करो साक्षात्कार आत्मा से अपने भीतर ही।

पाओगे जाकर इस मन की गहराई में कहीं।
मन भी तुम कंकर भी,उद्दलित तुम हो रहे।
****

3. तलाश आशियाने की

ताकत नियंता की जिसने असीम रचना की।
अनंत असीम आकाश, असंख्य तारो के बीच
मुझे तलाश आशियाने की

अस्तित्व मेरा क्या,एक अणुसा इस संसार मे।
जरूरत चिंगारी से लावा में तब्दील हो जाने की
मुझे तलाश आशियाने की

अणु हूँ मै या आकाश है मुझमें समाया हुआ ।
असीम मेरी आँखो में, अनंत यात्रा में भटका।
मुझे तलाश आशियाने की

मन तो है एक समुद्र, लिए रत्नों का भंडार।
जरूरत लहरों को, झील सा शांत बनाने की।
मुझे तलाश आशियाने की

शांत समुद्र में जिसने भी गोता लगाया है।
गहरे जाकर रत्नों का भंडार पा जाने की।

मुझे तलाश आशियाने की

समष्टि व्यष्टि का फर्क, अंतर है दृष्टि का
झांक दिल की गहराइ में,अच्छाई देखने की
मुझे तलाश आशियाने की

उद्विग्न विक्षिप्त विरक्त ही,तपपथ पर बढ़ता।
संकल्पशुन्य विकाररहित मन,कल्मष क्षीण करने,
मुझे तलाश आशियाने की

निरोग निर्मल विशुद्ध अन्तःकरण,परमतत्व पाता।
सम्पूर्ण जगत हेय जानकर, जीवन मुक्त होने की,
मुझे तलाश आशियाने की।

4. नारी

नारी तो बहुत ही जटिल रचना इस सृष्टि की
नारी मन की संरचना, पुरुष से अलग होती है।
नारी को माँ समझने की भूल करना नादानी है
एक शरीर होकर भी, नारी माँ नहीं हो सकती ।

नारी निर्माण में सरलता का तत्व ही नही होता
नारी सृष्टा जटिल रचना थाह पाना कठिन होता
माँ की दृष्टि में,वात्सल्य दान में उठा हाथ क्षमा
नारी दृष्टि में निषेध,आलोचना,कामना, याचना

माँ समर्पण का सात्वीक जीवन,आत्मसन्तोषी।
नारी सरल, संतुष्ट,समर्पित नही समर्पण मांगती।
नारी को पुरुष का अर्जन प्रिय , विसर्जन नहीं।
नारी से भयभीत या उपेक्षा करता पुरुष नही ।

असमर्थ पराजित, दुर्बल को माँ आँचल होता
नारी को लेकिन जूझता पुरुष कमनीय लगता
नारी को असमर्थ,पराजित दुर्बल पुरुष नही प्रिय
नारी को समृद्धि , वस्त्र, आभूषण सता है प्रिय।

अगर पुरुष कामना नही भी करे ऐसी नारी की ।
इच्छा अनिच्छा से प्रकृति के नियम बदलते नहीं।
नारी जीवन को सुख समृद्धि की ललक होती है।
संयत हो उसकी प्रकृति जीवन सफल कर देती है।

महावृक्ष तो पथिको को छाया दे सार्थक होता है।
पुष्पित वृक्ष बस चारों ओर सुगन्ध फैला देता है।
नारी भी प्रकृति का रूप,पुष्पित पल्वित होती है।
उसके जीवन में रूप,रंग,गंध की ललक होती है।

नारी तो बहुत ही जटिल रचना है इस सृष्टि की
नारी प्रकृति सी बस मदमाती और इठलाती है।

5. भक्ति बुद्धि और विवेक हर लेती है

करेगा क्या इतिहास माफ, पितामह को कभी।
भारी सभा में वस्त्रहरण, द्रोपदी का जब हुआ।

शर्मसार तो पितामह का भी,पर ज़मीर ही हुआ।
पितामह की राष्ट्रभक्ति ने उनका विवेक हर लिया।

बुद्धि ने उनकी, काम करना जो बंद कर दिया ।
होश आया तो शरसय्या और अफसोस बच पाया।

राजा की सहमति ही राष्ट्र भक्ति जो समझता रहा।
इस नीति में न राज का भला हुआ ना धर्म ही रहा।

लगता अंधा धृतराष्ट्र नही, अंधे तो हम भी हो रहे।
आंखे होते हुए,विवेक भूल भक्ति की दुहाई देते रहे।

भक्ति ने जब हमारी बुद्धि विवेक को हर लिया ।
हमारी बुद्धि विवेक का आज वस्त्रहरण हो गया।
****

6. सत्यं वद, प्रियं वद

सत्य कड़वा नही, सत्य तो बस सत्य होता है ।
जब आचरण में आता है तो ये धर्म ही होता है ।

दूसरे के बारे बोला जाकर सत्य कड़वा होता है।
अहंकार से ग्रसित हो, पाप का कारण होता है।

सत्य निश्छलता, और पवित्रता प्रतीक होता है।
अहिंसा, मैत्री, प्रामाणिकता का भाव होता हैं।

अनासक्ति, संतोष, शान्ति, अभय, करूणा और
प्रेम, संयम, अनुशासन का पवित्र भाव होता हैं।

गुप्त बात प्रकट कर,किसीको अपमानित न कर।
सुधार भाव से, बिना अपमान सत्य आचरण कर।

वाणी संयम,भाषा का विवेक सत्य भाषण होता है।
कलह में भाषा विवेक का आज अभाव होता हैं।

कहने का तरीका निर्माणात्मक हो विधवंसक नही।
शत्रु प्रति भी अपशब्द,अपमान,व्यंग्य प्रयोग नही।

स्पष्टवादन सीधा मुंह पर कह देना अवगुण होता है।
अपमान भाव मे खरा कहना सत्यवादन कब होता है।

स्पष्टवादी और सत्यवादी लोग लोकप्रिय नहीं होते।
व्यवहार कुशलता के अभाव में विवेकहीन हो जाते।

सत्य को हथौड़े की तरह किसी के सिर पर मारकर।
किसी का हृदय विदीर्ण करना सत्य का अपमान है।

सत्यवाद, स्पष्टवाद श्रेष्ठता- बोध का शिकार होता।

किसी सिद्धांत का पक्ष भी मानसिक पक्षाघात होता।

दूसरों का खुलेआम अपमान,जिनका नैसर्गिक अधिकार।
सत्य केवल वही है, अल्प बुद्धि के दायरे में आता है।

सत्य स्थिर या जड़ वस्तु नहीं,अपितु सदैव गतिमान है।
मानव की प्रगति में नित्य नए सत्य उदघाटित होते है।

स्पष्टवादन आपके लिए बहुत अच्छी विरेचक औषधि है।
बिना विवेक दुरूपयोग पर, अतिसार आमंत्रित करता है।
****

7. ज्ञान का भार

उगते सूर्य की लालीअंबर में पक्षी चहचहा रहे थे ।
श्वेतकेतु के पांव शनै शनै घर की और बढ़ रहे थे।
श्वेतकेतु गुरूगृह से शिक्षा तो पूर्ण कर आया था।
चाल में मस्ती कम,विद्‌वता की अकड़ ज्यादा थी।

अकड़ तो कोसो दूर से अपनी तरंगें फैला देती है
कुछ जानकर नही मूढ़ता से भरा वो आया था।
शास्त्रों का बोझ था , पर प्रज्ञा का हल्कापन नही
सब जानने की अकड़, जिसे लेकर घर आया था।

विद्‌वान् होकर भी श्वेतकेतु प्रज्ञावान नहीं हो पाया
ज्ञानी हो कर भी समझ की ज्योति ना जला पाया।
झुका पितृ चरणों में, अंतर्मन से नही झुक पाया ।
भीतर से जैसे पिता से ज्यादा विद्‌वान् हो गया।

उद्‌दालक ने कहा क्या तूने उस एक को जाना है ।
जिसे जान कर सब जान लिया जाता है?
ब्रह्म जान ब्राह्मण होते, जिसे पुरखों ने जाना है।
थम गया वक्त अकड़ का ज्वर तिरोहित हो गया।

मुझे जाना होगा जानकर इन चरणों में आऊँगा।
कुल पर कलंक नहीं बनुगां,उस ज्ञान को जानूँगा।

गुरूवर उस एक को जानने के लिए आया हूं।
कहा गुरु ने चार सौ गायें गोशाला से ले जाये
ना लौटे जब तक वह गाय हजार न हो जाये।
श्वेत केतु सौ गायों को ले जंगल में चला गया।

गायें चरती रहती, उन्हें देख समय ढलता गया
और एक हजार होने का वो इंतज़ार करता रहा।
बैठा रहता वो पेड़ो के नीचे, झील के किनारे,
शाम गायो का विश्राम देख विश्राम करता रहा।

चाँद उगा, ढल गया, सूरज निकला,और डूब गया।
दिन आये, रातें आई, ,समय का बोध खो गया।
अब कोई चिंता नहीं थी, न सुबह की न शाम की।
अब गायें ही तो साथी थी, वो ख़ाली होता गया ।

शुन्य वत सी आंखे, कैसे निर्दोष,मासूम, कोरी सी
गायों की मनोरम स्फटिक,आसमान सी पारदर्शी।
उनका संग था, कभी बैठ कर बांसुरी बजा लेता,
आंखों में झांक वो, लोको का सफर कर लेता।

जुगाल करे किसके साथ, ज्ञान जो सालों पढ़ा।
अब वो भी गऊ के समान निर्दोष सा होता गया।
अपने अन्दर की बांसुरी धीरे-धीरे बजने लगी।
और उसने उसे जान लिया जो पूर्ण से पूर्ण था।

सालों गुजर गये अचानक गुरु का आगमन हुआ।
पता चला गुरु से, श्वेतकेतु क्यो यहाँ आया था।
गुरु ने कहा श्वेतकेतु हो गई गाये एक हजार अब।
था वक्त लौटने का,उस एक को उसने जान लिया।

पदचाप धरा नहीं छू रहे, जब अपने घर आ गया।
मानो विनम्रता की आखिरी गहराइयों को छू गया।
श्वेतकेतु पूर्ण हो गया, कहीं मैं का भाव ही नहीं था।
बुद्ध हो गया अरिहंत हो गया ब्रह्म को जान लिया।

वो मिट आया, और जो मिट आया, वहीं हो आया।
अपने को खोकर आया। अपने का पाकर आया।
कैसा विरोधाभाष है। भीतर एक विराट शून्य था।
जो अपने होने का जो था, भेद तिरोहित हो गया।

वही जो उठता है निशब्द में, शब्दों के पास।
पूजा ग्रह भीतर जन्मा, भीतर मंदिर बना आया।
विचारों की भीड़ न थी, अब ध्यान की ज्योति थी।
शास्त्र बोझ न था अब, सत्य की निर्भार दशा थी।

8. अष्टावक्र का आत्मज्ञान (भाग 1-5)

8.1 - अष्टावक्र का जन्म

बोझिल पांवो से चलती ऋषि बाला।
और जानी पहचानी आश्रम की डगर।
थामे अपने नन्हे बालक का हाथ।
बढ़ी जा रही थी समीप था पितृगृह।

बोझ लिए हुए सुजाता वैधव्य का।
और साथ नन्हा बालक था कुरूप।
अंधकार भविष्य का एकमात्र सहारा।
एकमात्र सम्पति टुकड़ा था जिगर का।

बढ़ते जाते पांव और था विदीर्ण हृदय।
क्या गुजरेगी जन्मदाता पर स्वागत कर।
पाला बेटी को माना सदा जिगर जान।
असामयिक वैधव्य से छाया अंधकार।

पहुँच गयी सुजाता आश्रम के करीब।
मंत्रध्वनि हो रही संध्या की वेला पावन।
आश्रम में था अजीब शांत वातावरण।
मातपिता ने किया दोनो का स्वागत।

मिला उसे स्नेह सन्मान और आश्रय।
गुजरा था जहां उसका बाल्यकाल।
स्वगृह होकर भी ना जाने क्यो पीहर।
शादी के बाद लगता है अब अनजान।

पर नींद कहाँ ले पाई उसे अपने आगोश ।
धीरे से वो सरक गयी देख सुनहरा अतीत।
जब ऋषि उद्दालक ने एक आगंतुक को ।
किया कहोड़ को अपना शिष्य स्वीकार ।

ऋषि ने विद्या दान का बीड़ा जो उठाया।
कहोड़ नाम का था वो शिष्य साधारण ।
मगर शिष्ट था गुरूवाक्य में अटूट विश्वास।
और सदा से था वो गुरु सेवा में समर्पित।

उद्दालक ने कहोड़ को दिया विद्यादान।
पारंगत किया सिखाया वेद धर्मशास्त्र ज्ञान।
समय आने पर गुरु ने दी कन्या अपनी
होनहार का कर दिया पाणिग्रहण।

खुश थी ऋषि बाला सर्वस्व पाकर
खुशी खुशी बढ़ता रहा समय पांव पसार।
बसाया अपना संसार और हुई वो सगर्भ
होने वाला था नयी संतति का जन्म।

एक दिन कहोड़ कर रहे थे वेदपाठ।
तभी सुजाता के गर्भ में पल रहा बालक।
पाप से बचाने के लिए वो बोल उठा।
आठ त्रुटि इसमे आप जो कर रहे वेदपाठ।

सुनते ही कहोड़ का जागा अभिमान।
बोले उठे कर चेहरा गुस्से से लाल।
गर्भ से ही तेरी बुद्धि है इतनी वक्र।
किया मेरा अपमान तू होगा अष्ठ वक्र।
जन्मदाता होता क्या कभी निष्ठुर।
परंतु कहाँ ले जाता क्रोध का आवेश।

जनक दरबार मे कहोड़ ने किया शास्त्रार्थ।
विधि की विडंबना जहां कहोड़ गए हार।
राजऋषि बंदी ने दे दिया उन्हें मृत्युदण्ड।
डुबो दिया ऋषि कहोड़ को दी जल समाधि।

टूट गया सुजाता का संसार पाकर ये खबर।
नियति का खेल भी होता बड़ा अजीब।

टूटता है जब दुखो का पहाड़।
आ जाती है फिर सुख की बहार।

ठीक इसके बाद हुआ बालक का जन्म।
आसरा माँ का जीने लगी उसीका मुँह देख।

ऋषि उद्दालक हो उठे थे व्यथित।
लौटी पुत्री वैधव्य लिये पुत्र सहित पितृ गृह।
कूबडा नाटा था पुत्र, हाथ-पैर टेढा-मेढा कद।
मुनि ने कर नामकरण रखा नाम अष्टावक्र।

सोचते सोचते सुजाता समा गयी।
ले लिया नींद ने उसे अपने आगोश।

8.2 - अष्टावक्र जनक के द्वार

ऋषि उद्दालक के आश्रम में सब
उसे रखते देकर आदर प्यार और मान।
आश्रम में उसका ख्याल रखते सब
न आये हीनभावना न दुखी हो कभी मन।

अष्टावक्र विकृत शरीर मगर बुद्धि से कुशाग्र।
दस वर्षीय पारंगत पढे वेद-शास्त्र धर्म-ग्रन्थ।

एक दिन अष्टावक्र बैठा था नाना की गोद।
आठ वर्षीय मामा श्वेतकेतु ने उसे उठाकर
बैठ गया वो अपने पिता की गोद।
अष्टावक्र को हुआ पहला अहसास।

पिता है कहाँ मेरा, यह बना बड़ा सवाल।
अष्टावक्र माँ से मिला लिए अपमानित मन।
माँ से पूछा कौन उसके पिता, कहाँ है अब।

बेटे से पहली बार सुन ये सुजाता रही धक्।

आँखें भर बताया, जन्म से पहले का राज।
गए थे पिता जब राजा जनक के दरबार।
शास्त्री बंदी रहता था जहां बडा तार्किक।
डुबो देता विद्वान को शास्त्रार्थ में हराकर।

पिता कुतर्कों से हार गये ये था ये दुर्भाग्य।
जल में डुबो दिया पिता को बना वो निर्दय।
सहारा रहा नही मुश्किल हुआ भरण-पोषण
लेकर आ गयी तुझे अपने पिता के घर।

कहते सुजाता की आँखों में आया अश्रुजल।
दुष्ट को में पाठ सिखाने की होती है जरूरत।
बंदी को मै हराऊंगा जाकर जनक के दरबार।
माँ के आंसू पोछकर बोल उठा अष्टावक्र ।

अष्टाव्रक सीधा पहुँचा गुरु उद्दालक के पास।
मांगी आज्ञा बन्दी से करने को शास्त्रार्थ ।
शान्त होजा बेटा अभी तु नही परिपक्व।
इस उम्र में ना मिलेगा जनक के यहां प्रवेश।

गुरुदेव आप आदेश करो देकर आशीर्वाद।
बन्दी से शास्त्रार्थ करूँगा मै अवश्य।
दृढ़ निश्चय देख बोले ऋषि गुरुवर।
पूरी हो मनोकामना तेरी जाओ तुम वत्स।

माँ गुरु की आज्ञा लेकर चला अष्टावक्र।
पहुँचा जब वह राजा जनक के नगर।
राजमार्ग से आ रहे थे महाराजा जनक।
नौकरों ने उससे किया हटने का आग्रह।

मार्ग चलने पर जबाव में बोला अष्टावक्र।

मिले प्राथमिकता भारवाही और जो अपंग।
अन्धे, बहरे, स्त्री और जो होता असहाय।
इनकी प्राथमिकता के बाद राजा हकदार।
सही कहा कुमार ने ऐसा बोल राजा जनक।
राजा ने कुमार के लिए छोडा खाली मार्ग।

राजमहल में रोककर पूछ रहा द्वारपाल
कौन हो महाराज से क्या है तुम्हारा काम
उसने देकर परिचय बताया आने का कारण।

द्वारपाल बोला अभी तुम हो छोटे बालक।
पढ़ने की उम्र है तुम्हारी तुम करो अध्ययन।
अष्टावक्र बोले ज्ञान का नही उम्र से सम्बन्ध।
वेद-शास्त्र सारे पढ़ लिए मैने अपनी इसी उम्र।

शरीर से कुरूप सही बुद्धि नही होती कुरूप।
चिनगारी में होती ताकत वैसी जो होती अंगार।
उम्र बढ़ने से ॠषि कोई नही हो जाता विद्वान।
सूचित करो महाराज को बोले रखआत्मविश्वास।

सेवक को बुलाने भेजा महाराजा जनक ने।
सादर अभिवादन किया देख तेजस्वी कुमार।

....

8.3 - अष्टावक्र राजदरबार में

अष्टावक्र के राजदरबार में आते ही
टेढ़े-मेढ़े अंग देख और उसकी उम्र
सब दरबारी हँस पड़े लेकिन आश्चर्य
ग्लानिमुक्त विद्धवता के परिचायक
कुमार जोर से हँसे उन्हें हँसता देख।

राजा जनक ने पूछा होकर उत्सुक।

बोले आप क्यों हँसे ऋषि कुमार ।
तेजस्विता से बोले अष्टावक्र ।
समझा विद्वज्जनों की सभा पर
आया मूर्खों की सभा में आज।

बताया अपने हँसने का कारण ।
अब सुनो इनके हसने का कारण ।
देख टेढ़ा मेढा मेरा करूप शरीर।
जैसे चमार रखता चमड़े की परख।

और उन्हें मेरी बनावट की परख।
मैं तो नहीं इस शरीर का कारण।
बनाया जिसने कारण है वह कुम्हार।
घट टेढ़ा होने पर नही टेढ़ा होता जल।

सन्नाटा छाया सभा में हुए सब शांत।
अष्टाव्रक को आदर से दिया आसन।
क्षमा करें ऋषिवर हम सब हुए धृष्ट्।
निवेदन करे अपने आगमन का कारण।
राजन् शास्त्री बन्दी से में करु शास्त्रार्थ।

बन्दी से शास्त्रार्थ में आप नही वयस्क।
और न ही बन्दी को हराना है आसान।
शास्त्रार्थ हारने पर मिलती जल-समाधि।
ऋषकुमार आप बदल दे अपना संकल्प।

जितनी शिक्षा पाई गुरु चरणों में बैठ।
पर्याप्त है बन्दी से करने मे शास्त्रार्थ।
हारने पर मृत्यु का क्या होगा भय।
डर नही अच्छे उद्देश्य में देने को प्राण।

....

8.4 - बंदी की हार और कहोड़ की वापसी

शास्त्री बन्दी बुलाया हुआ शुरू शास्त्रार्थ।
अष्टावक्र सरलता से दिये बन्दी को उत्तर।
बन्दी घबराया मिले कठिन तर्कों के उत्तर।
लगा उसे आज जल-समाधि है निश्‍िचत।

अष्टावक्र ने पूछने शुरू किये अब प्रश्न।
बन्दी न दे सका अष्टावक्र को उत्तर।
अन्ततः उसने मान ली अपनी हार।
स्वयं जल-समाधि लेने हुआ वो तैयार।

अष्टावक्र बोले बन्दी! तुमने किये कुतर्क।
शास्त्रार्थ में निर्दोषों को दी जल-समाधि।
तेरी बुद्‌धि दूषित ज्ञानी होने का अहंकार।
जीवन लेना सहज है,पर देना बड़ी बात।

ज्ञान विकास के लिए न कर मानवता नष्ट।
शास्त्रज्ञान पराजित का न कर जीवन नष्ट।
बन सहायक सदा कर मानवता का विकास।
मानव सेवा कर शास्त्र को ना बना शस्त्र।

शास्त्र-ज्ञान करता है जीवन का विकास।
जबकि शस्त्र करता है जीवन का विनाश।

वचन दे गर्व में नही करना जीवन नष्ट।
हो गया शास्त्री बन्दी का घमण्ड चूर-चूर।
दौड़कर पकड़ लिए अष्टावक्र के चरण।
बाल ज्ञानी क्षमा करे मेंरे सब अपराध।

बंदी बोला महाराज मैं हूँ वरुण पुत्र।
मुझसे हारे हुये ब्राह्मण विध्वतजन
अपने पिता के पास भेजे करने को यज्ञ।
आएंगे अभी सारे ब्राह्मण आपके समक्ष।

बंदी कहते ही आ गये सब ब्राह्मण।
जिनमें शामिल अष्टावक्र पिता कहोड़।

अष्टावक्र ने किया पिता का चरणस्पर्श।
तब कहोड़ ने प्रसन्न होकर कहा पुत्र।
तुम जाकर करो समंगा नदी में स्नान।
उसके प्रभाव से हो जाओगे शाप मुक्त।

अष्टावक्र ने किया समंगा नदी में स्नान।
सारी वक्रता चली गयी सीधे हुए सब अंग।
****

8.5 - अष्टावक्र का आत्मज्ञान

ऋषि बोले शास्त्र नहीं बता सकता सत्य ।
शास्त्रों में है केवल नियम और सिद्धांत।
ज्ञान तो बसता है मानव मन के भीतर।

जनक ने सभाओ के किये कई आयोजन ।
काफी समय से थी आत्मतत्व की तलाश।
दूर दूर से आते रहे विद्वान प्रकांड पंडित।
सवाल सरल थे पर जबाब रहे थे नदारद।

वेद धर्मशास्त्र पारंगत आये कई विद्वान।
तरह तरह से बताते रहे यह आत्मतत्व ।
न मिला तत्ववेता जिसने किया हो दर्शन ।
नही करा पाया कोई आत्मतत्व अनुभव।

जो आत्मतत्व द्रष्टा ऐसा पंडित दुर्लभ ।
दूर दूर से पहुंचे कई ऋषि और विद्वान।
अष्टावक्र भी पहुंचे ऋषि कहोड़ के साथ ।
कुछ दिन देखते रहे विद्वानो का शास्त्रार्थ ।
आखिर ऋषि अष्टावक्र ने रखे अपने विचार ।

इस सभा मे कोई नही आत्मतत्व जानकार।
जनक ने पूछा ऋषि जानते आत्मतत्व आप।
राजमंत्री ने ऋषि जब कहे राजन के सवाल ।
ऋषि ने रोका बोले किसे आत्मतत्व दरकार।

सादर सामने आये राजन किया वही सवाल।
आत्मतत्व होता तभी जब मन हो जाए पवित्र।
राजा जनक ने गुरुदीक्षा ली गुरु हुए अष्टावक्र।
अष्टावक्र राजा जनक को लेकर गए वन।
जैसे ही गुरु आदेश से चढ़ने लगे अश्व ।
गुरु ने बीच रोककर ली गुरुदक्षिणा मांग।
राजा तैयार हुए देने को सब कुछ दान।
गुरु बताया न तेरा कुछ नही इस संसार।
हो जो तेरा दे गुरु दक्षिणा में वो ही दान।
जैसे ही राजा जनक ने दिया मन का दान।
मन जब रहा नही हो गया तत्व का ज्ञान।
तीन दिन तक जनक को लग रही समाधि।
मिल गया राजन को जो था आत्मज्ञान।
****

9. नचिकेता का आत्मज्ञान

ऋषि उद्दालक ने किया मोहमाया त्याग
कर संकल्प आरम्भ किया सर्वमेध यज्ञ।
यज्ञ समाप्ति पर कर दिया सर्वस्व दान।
आया समय ब्राह्मणों को देना था दान।

दस वर्षीय पुत्र के लिए जागा पुत्रमोह।
अच्छी गाये रख दान दी अदुग्धा वृद्ध।
नचिकेता ने व्यर्थ जाता देख यज्ञ फल।
लिया प्रण पिता बचे न हो उनसे पाप।

नचिकेता बोला किसे करेंगे मेरा दान।
नचिकेता का प्रश्न टाल गए पुनः ऋषिवर।
तीसरी बार पूछा ऋषिवर बोले क्रोधवश ।
देता तुझे दान मृत्यु को उसका कर वरण।

यज्ञ सन्नाटा छा गया पुत्र ना था विचलित।
उद्धत हुआ नचिकेता जाने को यम द्वार।
महर्षि उद्दालक का छलका पुत्र ममत्व।
धर्म नही जाता मान मत तू क्रोधवचन।

नचिकेता बोला नही बताओ पुत्र मोह।
पूर्वजो ने नही किया अपना वचन भंग।
सदाचरण सर्वोपरि शरीर है सदा नश्वर।
आज्ञा दो यमपूर की वचन करो रक्षण।

सत्यपरायण पुत्र देख ऋषिवर गए सहम।
भारीमन आज्ञा दी पुत्र ने किया प्रयाण।
यम अनुपस्थित नचिकेता खड़े यमद्वार।
तीन रात बिताई बिना ग्रहण अन्न-जल।

यम ने ऋषि को किया पाद्याघ्र्य अर्पण।

यम बोले आतिथ्य स्वीकारें मांगे तीन वर ।

पितृभक्त नचिकेता ने माँगा पहला वर।
मृत्युस्वामी ! रहे मेरे पिता शान्त-संकल्प,
हो जाय मेरे प्रति क्रोधरहित प्रसन्नचित्त।
बोले यमराज ऐसा हो कहा तथास्तु तब।

ऋषि नचिकेता ने फिर मांगा दूसरा वर।
आपको अग्नि विदित स्वर्ग की साधनभूत।
जिसे जानकर मिलता स्वर्ग में अमृतत्त्व।
जानना चाहूंगा आपसे अग्नि का रहस्य।

अग्नि से प्राप्त हो अनन्त स्वर्ग का लोक।
मूल कारण विराट जगत की प्रतिष्ठा का।
रहता विद्वानों की बुद्धि गुहा में स्थित।
बताई विधि सारी कैसे करे अग्निचयन।

यम बोले यह अग्नि प्रसिद्ध होगी तेरे नाम।
ग्रहण करो यह विचित्र रत्नों वाली माल।

मांगा नचिकेता ने मृत्यु से तीसरा वचन।
जानना चाहूँ यमराज आपसे आत्मतत्त्व।
आत्मनिर्णय न होता अनुमान हो या प्रत्यक्ष।
झिझके यम आत्मविद्या नहि है साधारण।

बताऊ कैसे तुम्हे यह ज्ञान जो बहुत दुरूह।
जिद छोड़ो यम ने चलाया भुवनमोहन अस्त्र।
सुर-दुर्लभ सुन्दरियाँ और दीर्घकाल स्थायिनी।
भोग-सामग्रियों का दिया ऋषि को प्रलोभन।

पर डिगा नही सके नचिकेता का निश्चय।
विचलित न कर पाए अडिग थे ऋषिवर।
यमराज बोले निंदित वित्तमयी संसार गति।
ब्रहमज्ञान अधिकारी पुरुष जो वैराग्यसम्पन्न।

श्रेय-प्रेय विद्या-अविद्या का विपरीत रूप।
वर्णित किया यमराज ने आत्मा का ज्ञान।
न जन्मता न मरता है आत्मा का यह तत्व।
न किसी से उत्पन्न ही न कोई इससे उत्पन्न।

विस्तारपूर्वक समझाया आत्मा का स्वरूप।
वह अजन्मा है नित्य शाश्वत और सनातन।
बना रहता जो होने पर भी शरीर का पतन।
ये है सूक्ष्म से सूक्ष्मतर महान से महानतम।

रहता अनित्य शरीर में है मगर शरीर रहित।
व्याप्त अस्थिर पदार्थों में पर है सदा स्थिर।
चले अग्नि उस डर से सूर्य तपता उसी डर।
चले इन्द्र, वायु, मृत्यु है सबको उसका डर।

ना मिलता बुद्धि से ना मिलता वेद प्रवचन।
नही मिलता जो करे शास्त्र श्रवण जन्मभर।
मिलता उसको जिनका पवित्र अन्त:करण ।
मलिनता की छाया भी जिसे ना करे स्पर्श।

व्याप्त कणकण में चलता जिससे सृष्टि क्रम ।
काल आने पहले जानता जो हो जाता मुक्त ।
मिटी कामना जिसकी हुई जो वासना शान्त।
शोकादि क्लेशों के पार वो पाता परमानन्द ।

स्वागतार्थ उमड़ पड़े वृद्ध तपस्वि ऋषिवर।
उद्दालकपुत्र नचिकेता लौटे लेकर आत्मज्ञान।
****

10. डर (खौफ)

माँ से सीखा था पहला सबक, डर बाबा पुलिस का।
तब नही थी कोई खबर, जीवन में डर होता है क्या।
अब तो बन गया ये डर, एक अंग इस जीवन का।
कभी जाना पहचाना सा, है डर कभी अनजाना सा।

डर कहाँ कब कैसे नही, डर तो हमारी रग रग में बसा।
डर जीवन की पहचान है, डर ही मौत का है आवाहन।
बसता ये जो दिल दिमाग मे, फैला है जैसे शमशान में।
आसपास के वातावरण में है,और फैला सब समाज मे।

डर कभी दौलत खोने का,कभी शोहरत खो जाने का।
दुख के पा जाने का तो, कभी सुख के चले जाने का।
झूठ को छुपाने का तो, फिर झूठ के खुल जाने का।
धङकन बढ जाने या फिर धड़कन के रुक जाने का।

डर दुश्मन से, दोस्त से और अपने ही रिश्तेदार से।
माँ बाप से, बीबी बच्चो से,भाई बहन और प्यार से।
डर का ना होना भी,जीवन में डर ही लेकर आता है।
मुश्किल तब भी हो जाती,जब डर खत्म हो जाता है।

जीवन में मानो जब मृत्यु,यश अपयश,लाभ हानि
है अगर सब विधि हाथ, तो फिर डर बचेगा कहाँ।
संतोषी मन में नही रहे, जब खुशी पाने की और।
ना रहे गम खोने का तो,फिर कहो डर रहेगा कहाँ।

शास्त्र ही सिखाते है डर से,आजाद हो जाने का।
सत्य की राह चलने का भय से मुक्ति पाने का।
****

11. अभिमन्यु वध

मातृभूमि पर न्योछवार होने युद्ध का उद्घोष हुआ।
प्राणो की आहुति देने योद्धाओं का आवाहन हुआ।
भगवान कहते है धर्मयुद्ध स्वर्ग का द्वार होता है।
क्षत्रिय जीवन मे जब भी इसका आवाहन होता है।

अभिमन्यु निकल पड़ा, रण का जब उद्घोष हुआ।
तमन्ना कर गुजरने की,राष्ट्र के नाम समर्पित हुआ।
गरिमामय इतिहास को जो कलंकित कर जाते है।
अक्षम्य आकांक्षा पूर्ति मे,कैसे वे अंधा हो जाते है।

महाभारत की बिसात में, एक चक्रव्यूह रचा गया।
गरिमा को झकझोर दे,समय सिसकिया लेता रहा।
दे आश्वासन बुजुर्गों को, उसने रण में कूच किया।
संगी साथी छूट गए पीछे, वह आगे बढ़ता गया।

घिर गया दुश्मनो के बीच, वह अडिग लड़ता गया।
देख पराक्रम रोक ना सके ,अधर्म युद्ध शुरू किया।
घिरा हुआ था वह शेर, सियारो के झुंड में फंस गया।
बहुत लड़ा वह मगर, हथियार भी साथ छोड़ गया।

टूटे रथ के पहिये से उसने पराक्रम ऐसा दिखा दिया।
दांते तले अंगुली दबा, दुश्मन ने पीठ पर वार किया।
अनीति युद्ध में विकृत मानसिकता का उन्माद था।
जहां आदमी अपनी नजरों में बौना नजर आ रहा था।

बेबस नजरो से दुर्योधन इतिहास कलूंसित कर गया।
खुशी न मिली जीत की, चेहरा स्याह ही नजर आया।
अभिमन्यु था शुरवीर, इतिहास में नाम अमर हुआ।
होनी तो प्रबल होती है, विधि का विधान अडिग था।

पिता जिसका महाबली,और मामा स्वयं भगवान था।
नही बचा पाया कोई वह तो अमर होने ही आया था।
****

12. बाँसुरी का जादूगर

कहानी है किसी हेमलिन नामक शहर की।
बडा एक झुंड चूहो का उस शहर में आया।

चूहों ने बहुत शोर कर आतंक इतना मचाया।
हर नगर वासी चूहों की शैतानी से भर आया।

लोग असमर्थ थके चूहों से बचना था असंभव।
बिल्लियां भी चूहों को मारने में नहीं थीं सक्षम।

एक नन्हे से जानवर से हम बेबस हो जाते है।
फिर भी विश्व फतह का यहां सपना संजोते है।

इंसान की बेबसी ऐसी कोई कुछ न कर पाया।
लेकिन हर बीमारी के साथ इलाज भी आता है।

एक रोज एक बांसुरी वाला उस शहर मे आया
अच्छा प्रलोभन देकर जनता ने उसे मनाया ।

जनता के प्रस्ताव से खुश होकर बाँसुरिवाले ने।
चूहो से शहर को मुक्त करने का बीड़ा उठाया।

मान गया बाँसुरिवाला निजात दिलाने चल पड़ा।
बाँसुरी की धुन पर हर चूहा बिल से निकल पड़ा।

उसके पीछे चले आये चूहै को नदी के मुहाने पर।
देखते देखते हर चूहा नदी में समाता चला गया।

लोग खुश थे शहर छोटी शैतानियों से मुक्त हुआ।
खुश थी जनता सारी चूहों का आतंक खत्म हुआ।

डर नही रहा चूहों का बाँसुरिवाला क्या कर लेता।

मेहनताना देने का वक्त आया सब मुकर गए।

बेबस होकर बाँसुरिवाला अब आंसू बहाते रहा।
और दुखी मन से वो शहर छोड़कर चलता बना।

तीन वर्ष बाद एक रोज बाँसुरिवाला लौट आया।
बांसुरी की धुन पर हर बच्चा घर से निकल आया।

चला गया वो दूर जंगल मे लोगो को होश आया।
ढूंढने निकले बच्चो को कोई उन्हें ढूंढ नही पाया।

दूसरे को कमजोर समझ आदमी अन्याय करता है।
बेबस मैदान छोड़ जाता है कोई वार करने आता है।

क्यो किसी का हक मारकर शब्दों से पीछे हट जाए।
और दूसरे की बेबसी पर क्यो कोई खुशिया मनाए।

अन्याय से पहले गिरेबान में झांक तो लेना चाहिए।
नही होता है जिसका कोई उसका खुदा तो होता है ।
****

13. सबल का अत्यचार

भेड़िये ने मेमने से झगडा करने का सबब बनाया।
मांस नोचकर दावत उड़ाने मनमें प्रोग्राम बनाया।

झगड़ पड़ा मेमने से, झरने का पानी गंदा किया।
तुम ऊपर पी रहे और मै नीचे, मेमना मिमियाया।

तो फिर पिछले वर्ष तू मेरे से क्यू झगड़ पड़ा था।
मेमना बोला अरे मै तो इस वर्ष में ही जन्मा था।

तो फिर तेरा बाप मेरे से जरूर ही लड़ पड़ा था।
आज बदल तो लूंगा तुझसे, मरने तैयार हो जा।

असहाय सदा अत्याचार का शिकार होता है।
ताकतवर तो झगड़े का कारण तलाश लेता है।
****

14. रामायण में महाभारत

स्वघोषित हनुमान ने रामकाज का प्रण लिया।
दिल्ली से लगाकर छलाँग बिहार प्रस्थान किया।
विजयश्री को खोज अपने राम को रिझाना था।
राम के बड़े भाई का महल आग में जलाना था।

लोकडाउन् दर्द की सुरसा मुह खोले खड़ी थी।
सुरसा रास्ते में देखकर हनुमान ने हुंकार भरी।
हनुमान जैसे जैसे बदन पसारने कोशिश करे।
सुरसा के आगे लालू के लाल कद बढाता चले।

सुरसा ने लाल का रास्ता आसान कर दिया।
किला ध्वस्त हुआ हनुमान देखता रह गया।
हनुमान ने जेडीयू की लंका को जला दिया।
लाल को जीता, राम का सपना तोड़ दिया।

रामायण में महाभारत जब प्रविष्ट होने लगे।
भाई भाई के अनिष्ट का संकल्प करने लगे।
विजयश्री का दर्द अपने सीने में जलने लगे।
भाई की हार चाहे, जीत का जश्न कैसे सजे।
****

15. झूठ की फैक्ट्री

झूठ की फैक्ट्री ये युग की अनोखी पहल है।
समय के साथ परिवर्तन संसार का नियम है।
ऐसा नही कि पहले झूठ नही चलता था।
गृहउद्योग जो था ये इंडस्ट्री में बदल गया है।

झूठ कभी इतना व्यवस्थित नही हो पाया।
अब यूट्यूब फेसबुक ट्विटर से जम गया है।
आज युद्ध में झूठ शक्तिशाली हथियार है।
जीतेगा वही जो व्यवस्थित झूठ चलाएगा।

झूठ का व्यापार भी अब रोजगार पैदा करता है।
फेक न्यूज़ और ट्रोल की सेना तैयार करता है।
कोई झूठ फैलाने कोई पकड़ने में लगा रहता है ।
फेकट्स चेक सोशल मीडिया में छाया रहता है।

गिने जाते है रोज़ ट्रम्प कितने झूठ बोलते है ।
सिलसिला 24 झूठ हर दिन से शुरू करते है।
16 मिनट की वार्ता में 16 झूठ बोल जाते है।
तीन साल मे ये अंक बाईस हज़ार छू जाते है।

दक्षिणपंथी ट्रोलआर्मी फेकन्यूज़ फैलाते है।
फेसबुक ट्विटर सिस्टेमैटिक झूठ फैलाते हैं।
अपने को झूठ षड्यंत्र का शिकार बताते है
मगर जनता को झूठ का शिकार बनाते है।

सब जानते हैं झूठ कभी जीत नही पाता है।
मगर झुठो से जीतना क्या आसान होता है।
अभिव्यक्ति की अजादी का हवाला देते है।
झूठ कोअभिव्यक्ति की आज़ादी बताते है।

सोशल मीडिया ने झूठ में क्रान्ति लायी है।
सोशल मीडिया इस पर लगाम लगाता है।
मगर झूठ के दुश्मन आसपास ही बसते है।
जो झूठ के उद्योग को पनपने नही देते है।

कुछ चैनल ये हिमाकत ट्रम्प को दिखाते है।
झूठ बता प्रेसवार्ता का प्रसारण रोक देते है।
नादान बनकर झूठ के प्रमाण मांग लेते है।
नेताओ से झूठ छोड़ने की आस कर लेते है।

हिसाब के नियम बनेंगे और चिट्ठा बनाएंगे।
झूठ का बहिखाता होगा बैंक भी बनायेंगे।
झूठ का जीडीपी देश की प्रगति बताएगा।
झूठ प्रामाणिक करने की एजेंसिया बनाएंगे।

झूठ का हिसाब रखना अमेरिका की देन है।
सुनहरे अक्षरों में यह इतिहास लिखा जाएगा।
झूठ का इतिहास अपनी ऐसी जगह बनाएगा।
इंटरनेटयुग झूठ का बल लाखो गुना बढ़ायेगा।

जमाने मे सुना था एक झूठ छिपाने के लिए
हज़ार झूठ बोलने पड़ते हैं।
ट्रम्प सीना तान कर झूठ बोला पर वो
झूठ छिपाने को नही सच हराने को थे।
****

16. व्यापार का अतिरेक

कोई कफन बेचकर कोई कफन बांध कर करते है।
व्यापार के नशे में ये धार्मिक भावना आहत करते है।
जिंदगी सस्ती हो जाती है पैसा सब नज़र आता है ।
क्या समझे वह जो व्यापार में आगे बढ़ता जाता है।

चार्ली हेब्दो साप्ताहिक पत्रिका न्यूज़ में छाई है।
मौत के खेल में यह कितनी सीढिया चढ़ आयी है।
जीवन खोकर भी व्यापार बढ़ाना इसने याद किया।
व्यापार के उन्माद में हर सीमा को इसने तोड़ दिया।

2006 में इस्लाम विरोधी कार्टून प्रकाशित किया।
व्यावसायिक सफलता का सब रिकॉर्ड तोड़ दिया।
एक लाख से 1.60 लाख पत्रिका को बेच दिया।
डेढ़ लाख उस दिन बाद और प्रिंट कर रख दिया।

राष्ट्रपति ने तब धार्मिक आक्षेपों की निंदा की।
जुनून को भड़काने से बचने की सलाह भी दी।
नही करना चाहिये वह काम समाज मे जिससे।
किसी के विश्वासों को चोट पहुंचा सकती हो ।

हमलावरों ने 2011 में आफिस में आग लगाई।
वेबसाइट हैक हुई, इसे तो पब्लिसिटी ही मिली।
व्यापार में अफसोस नही नफा नज़र आता है।
जे सुइस जैली (सभी क्षम्य) नारा बुलंद होता है।

दो बंदूकधारी 2015 में ऑफिस में आग लगाते है।
जिस नरसंहार में बारह कर्मचारी को मार जाते हैं।
60 हज़ार प्रति बढकर तीस लाख बिक जाती है।
आतंकवादी कटघरे में,पत्रिका आज़ाद रह जाती है।

राष्ट्रपति इसको आतंकवादी हमला बतलाता है।

फ्रांस सरकार और फंड्स से दान मिल जाता है।
पत्रकारों ने अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता की दुहाई दी।
प्रेस की स्वतंत्रता में कई शहरों में रैलियों भी हुई।
जे सुइस चार्ली (आई एम चार्ली) का नारा चला।
पर अभिव्यक्ति की आड़ में आतंक तो नही छिपा।

2020 में फिर पैगम्बर पर छापने की घोषणा की।
हमलावर ने फिर दो लोगों को घायल कर दिया।
राष्ट्रपति ने आतंकवाद से पत्रिका के बचाव किया।
यूरोपीय नेताओं ने भी उनका समर्थन ही किया।

फ्रांसीसी उत्पादों के बहिष्कार का आह्वान हुआ।
कुवैत कतर सुपरमार्केट ने वस्तुओं को रोक दिया।
राष्ट्र ने इस खेल में किसने क्या खोया क्या पाया।
पत्रिका को प्रसिद्धि में अपना प्रॉफिट नज़र आया।

पत्रिका के कर्मचारी इस्लाम पर हमला कर रहे हैं।
असहिष्णुता, उत्पीड़न की राजनीति बढ़ा रहे हैं।
लोकतंत्र को खतरा है कानून कमजोर कर रहे।
अभिव्यक्ति के नाम पर घृणास्पद भाषण कर रहे।

उत्तेजक कार्टून इस्लामविरोध से प्रसिद्धि मिली।
राष्ट्रपति का मजाक प्रसिद्धि का पैमाना तो नही।
जिसे मुस्लिम अपमान धार्मिक अपराध मानते रहे।
पोप का मजाक,चरमपंथी दक्षिणपंथी निशाने पर रहे।

आतंकवाद का बहिष्कार तो हर हाल में होना चाहिए।
पर आतंक उकसानेवाले को कटघरे में होना चाहिए।
****

17. नेताजी

साल दर साल सरकारे तो बदलती रहे।
उसके केंद्र में सदा आप ही नेताजी रहे।
क्या धंधा करते आप सम्पति बढाते जाए।
जनता टैक्स देकर रोटी को तरसती जाए।

अर्थव्यवस्था के नाम टैक्स वसुलते रहे।
फ्रीबी के आफर बाँटकर वोट बटोरते रहे।
सामान्य जरूरत की चीजें नसीब ना हो।
आप गरीब से लग्सरी कार का वादा करे।

टूटीफूटी सुविधा को आपने सुधारा नही।
नई सुविधा बनाने का आपको गवारा नही।
साधारण नियम है कि आप जो वसूल करे।
उसका जनता के कल्याण में उपयोग करे।

स्मार्ट सिटी का सपना जनता को दिखाओ।
पर बनाकर विदेश से धन भी तो कमाओ।
गरीब को हवाई जहाज का सपना दिखाओ।
पर दो वक्त की रोटी का जुगाड़ तो बताओ।

टैक्स इकठा करे और अनाज सड जाता है।
सुविधाए कम होती पर टैक्स बढ जाता है।
जन अगर टैक्स ना दे चोर कहलाता है।
गुनाहगार कौन अगर अनाज सड जाता है।

अन्याय है जहाँ अस्सी करोड़ गरीब बसते।
हर गरीब से भी आप टैक्स तो है वसूलते।
जनता की रेल में दो डिब्बे जनरल के लगते।
चार सौ भेड बकरियो की तरह सफर करते।

पुलिस आप बनाये अपनी सेवा के लिए

जनता को लूट कर कोई भी चला जाए।
आतंकी सदा ही सजा का रहेगा हकदार।
कानून नही हो सकता आतंक का औजार।

यहां प्राकृतिक संपदा का भंडार और यहां
महान इतिहास टूरिस्ट प्लेस बेशूमार है।
गरीब जनता सदा गरीब रहती जाती है।
गरीब चुने आपको अमीर कैसे हो जाते है।

सरकार तो कल्याणकारी संस्था बनी रहे।
फ्रीबी बंद कर जनता को सुविधा देती रहे।
टैक्स का उपयोग बाहर से कमाने में करे।
समाज मे हर पैसे के खर्च का हिसाब दे।

अध्ययन करके यह तो देख लेते जरा।
सरकार महत्वकांक्षा का नाम नही होता।
पेट की भूख जैसी आग जब फैलती है।
धर्म और समाज के बंधन तोड़ देती है।

स्वार्थ से ऊपर उठकर भाईचारा लौटाओ।
समाज मे अमन शांति तो जरा लाओ।
****

18. मुद्दा कहीं खो गया

तीन नोटिस के बाद ऑडर मिला ससपेन्ड हुआ।
एक मुस्लिम ससपेंड हुआ दाढ़ी बढ़ाना जुर्म हुआ।
सेन्सेशन तो था न्यूज़ में मीडिया में परवान चढ़ा।
रोटी मीडिया से नही निकलती हंगामा खैर हुआ।

पेट की भूख कभी कहाँ किसीकी कब रुकती है।
माफीनामा अगर बहाल करे क्यो रोना जरूरी है।
कटवाकर दाढ़ी पहुंच गया नौकरी बहाल हुआ।
मीडिया बेचैन हो गया मुद्दा आया वो खो गया।

देते रहे जमकर गालियाँ भडास सारी निकाल दी।
था कमजोर मुद्दा हिन्दू मुस्लिम होते होते रह गया।
तमाशा तो दुनिया करेगी रोना तो अकेले होता है।
समझो धर्म से पहले रोटी का पलड़ा भारी होता है।
****

19. नया रामराज्य

कालाधन महंगाई पर लगाम और अच्छे दिन का।
सब्ज बाग दिखाकर ऐसा एक चमत्कार कर दिया।

संघी साथी जुटे सारे, दिल्ली में अखाड़ा बन गया।
मोर्चा संभाला ऐसा कांग्रेस की लंका को जला दिया।

भुगता वनवास अकेले, मा को अकेला छोड़ आये।
क्या होती नारी सुरक्षा पत्नी पहले ही छोड़ आये।

सन14 में आयी शुभघडी बनाया महल दिल्ली में।
बजरंग दल को सौंप सुरक्षा,अमित हनुमान बनाये।

सज धज कर बंदर सेना ने कार्यभार संभाल लिया।
बिना गाय पाले ही गौरक्षक दल अब तैयार किया।

बजरंग गौरक्षकों ने मिलकर नया कांड रच दिया।
अत्याचार किया पुलिस ने,पुलिस को कुर्बान किया।

जन गण खुशिया मनाओ,आई शुभ घड़ी शुभ बेला।
विराजे महाराज संसद नव रामराज्य शुभारम्भ हुआ।
****

20. लालू हो गया लाल लाल

नीतीश के हवाले हुआ था,सीखने राजनीति के सवाल।
गुरु से गुर सिख उसी की, खाट खड़ी कर आया लाल।

लालू को हो गई जेल, बाहर रह गया था अकेला लाल।
असमय जिम्मेदारी ने बालक को जल्दी किया जवान।

चाचा चक्कर खा रहे, राजनीति में ऐसा किया धमाल।
चाचा भुले देना कोई मिसाल,लालू भी दंग देख कमाल।

कई धुरंधर आये साथ,जब बिछी राजनीति की बिसात।
लाल ने चल दी ऐसी चाल, दे दी सबकी हवा निकाल।

सूत के कारनामे देख, राबड़ी भी हो रही मालामाल।
जलवा देख लाल का, लालू भी हो रहे है लाल लाल।

चाचा कहे अंत भला तो सब भला,राज लिखा तेरे भाल।
मै तैयारी करूँ वनगमन की,अब तू ही मेरा तीर संभाल।
****

21. कुँवारे का सपना

एक दिन मिल गए बाबाजी किया दंडवत बोला सून (soon)।
बाबाजी जीवन मेरा सुनसान आये अब इसमें एक मून ।

पढ़ते पढ़ते बालपन गुजरा, प्रेम को समझ नही पाया।
ढाई अक्षर प्रेमवाला पंडित बनने की आशा में आया।

बहुत समय रहा आवारा ।मीले अब जीवन को किनारा।
बाबाजी मंझधार में मेरी नैया। बन जाओ आप सहारा।

घर मे खेले कूदे छोटे बच्चे सुनहरा बचपन लौटा दे।
दिला दो एक अदद बीबी जो वैतरणी पार करा दे।

सबकी इच्छा पूरी करते । इस बार आया मेरा नंबर।
करो चमत्कार मिल जाये इस बार एक बीबी सूंदर ।

हो जाये मेरा जीवन सेट ।करके आया उमीद आज।
थामो जीवन की पतवार बन जाओ सहारा आप ।

माता पिता की सेवा करे। साथ सिनेमा मॉल चले।
घूम आये हम देश विदेश खाये पिये खूब मौज करे।
****

22. ट्रम्प को राष्ट्रपति बना दो यारो

सारा अमेरिका समझा समझाकर हार मान रहा।
राष्ट्रपति पद की दौड़,अब भी ट्रम्प नहीं हार रहा।
लोग बोले चार वर्ष पूरे हुए अब तो होश में आओ।
व्हाइट हाउस छोडो,और अब तो अपने घर जाओ।

ट्रम्प नही मान रहा एक बड़ा ही पेच फंस गया।
बीबी ने उसे छोडने का ऐसा अल्टीमेटम दिया ।
हार मानेगा तो छोड़ जाएगी घर नरक बनाएगी।
सम्पति में अपना हक़ जता वो दावा लगाएगी।

हरयाणवी ताऊ भी एक बार ऐसा फंस गया था।
दो और दो पांच होते है, ऐसी शर्त लगा बैठा था।
हारने पर उसने भैंस देने का वादा कर किया था।
वो माने नही पूरा गांव समझाकर हार गया था।

मामला जब पंचायत पहुंचा,सबने उसे समझाया।
नही माना तो सरपंच ने उसकी बीबी को बुलाया।
बीबी उसे समझाने के लिए जब एकांत में लायी।
मान जाओ उसने समझ जाने की गुहार लगाई ।

बोला ताऊ बीबी से, अरे तू बहुत ही भोली है।
हार मान लूंगा तो अपनी भैंस देनी पड़ जाएगी।
बीबी को बात समझ आयी सरपंच को समझाई।
हमारे हक में फैसले से यह गृहस्थी बच जाएगी।

आपसे आशा इतनी ट्रम्प से सहानुभूति जताओ।
उसकी बसी हुई गृहस्थी को अब टूटने से बचाओ।
बाइडेन को यारो, फिर कभी राष्ट्रपति बना लेना।
अबकी ट्रम्प को चार साल देने की जुगत लगाओ।

****

23. पूंछ अटक गयी

हाथी निकल जाता है पूंछ अटक जाती है।
कहावत बहुत पुरानी मानने में नही आती है।
पूर्वजो की देन है ये जो न तो इतने सभ्य थे।
रहते थे गांवो में और जो ना आधुनिक ही थे।

आज कोई कैसे मान ले पूंछ अटक जाती है।
महामहिम राष्ट्रपति ने ये साबित कर दिया।
निकलने लगा हाथी और थोड़ा जब रह गया।
पूंछ आयी हाथ में,और पूंछ को पकड़ लिया।

किस्सा ये महान सभ्यता का जंगल का नही।
जहां विश्व के चौधरी ऐसे इतिहास लिखते है।
दुनिया ने देखा तीन दिन में हाल ये हो गया।
ना पूंछ निकल रही ना हाथी हिल पाता है।
****

24. पूछता है भारत

यह तो सरासर था पत्रकारिता का अपमान।
पत्रकार जेल जाए केवल उकसाने के नाम।
रिपोर्ट नही किया आपने कोई मिड डे मील।
फिर कैसा है राष्ट्रद्रोह, क्यों हुई आपको जेल।

बेखौफ डराते आप सरकार नेताओ को यहां।
सरकार सीबीआई सब आपके बचाने तैयार।
आपको अरेस्ट कर की चोट अभिव्यक्ति पर।
जनता भी गुमराह है आपकी अभिव्यक्ति पर।

जो आप जानते है, नही जानता कोई यहां।
पूछता है भारत, सर्टिफिकेट मिलता कहाँ।
पत्रकारिता का स्वर्णिम युग देन है आप की।
विडंबना आज पत्रकारिता खतरे में आ गयी।

रिया को जेल न कर सकी सीबीआई साबित।
आपकी पत्रकारिता से मिल जाते सारे सबूत।
केवल रिया को रिपोर्ट कर आप बन गए टॉप।
नही पकड सका कोई, ये टीआरपी का खेल।

रिया का केस से भी,क्या बड़ा मसला है चीन।
न्यूज़ को नये आयाम देना आपकी है फितरत।
मसला कोई भी होआपकी रिपोर्टिंग कमाल।
हाथी भाग जाए चूहा चले जब अपनी चाल।

आप पहुंच गए कटघरे में और पूछता है भारत।
आप जेल कब जाएंगे, नही चल पाया हैश टेग।
आपने आत्महत्या के लिए इन्हें उकसाया क्या।
पोलीस चाहती आपकी आजाद अभिव्यक्ति यहां।

आप देते सदा पत्रकारिता में सेंसेसशन का तड़का।

यह न्यूज़ भी तो नही केवल सेंसेशन का जलवा।
कौन नही जानता है आपके वकीलों का जलवा।
क्या जोर है कानून की बाजुओं में अब भी बचा।

कौर्ट भी आपसे पूछता है कि पूछता है भारत।
आजतक भी पूछता तोड़ा बीस साल का रिकार्ड।
कौई नही कर पायेगा आप जैसी पत्रकारिता यहां।
जो देश को शौहरत दिला सके आपके बिना।

अच्छे रेपिस्ट हत्या के अपराधी बच जाते यहां।
कुछ तो पहुंच जाते पार्लियामेंट तक भी यहां।
प्रभु कहीं ये नही आपकी लीला का चमत्कार।
नही तो कैसे फंसते आप जैसे राष्ट्र भक्त यहां।

जो कृपा नही मिलती बुजुर्ग पत्रकार को यहां।
सरकार नेता जनता की कृपा बरसने को तैयार।
आपकी महिमा बयान कर रही आपकी चेनल।
अपराधी भी हो जाता अभिव्यक्ति को आजाद।

जब हो जाएगा इस कथा का भी सुखद पटाक्षेप।
स्वर्णिम अक्षरों में लिखा होगा आपका इतिहास।
****

25. नितीश का वनवास

पंद्रह वर्षो का जंगलराज अविरत चलता रहा।
राजनीति धुरंधर नीतीश ने राज में सेंध मारा।
राजनीति के खेल एक तब ऐसा मोड़ आया ।
लालू महारथी को दे पटखनी राज बदल डाला।

बिहार के सिहासन पर नीतीश ने कब्जा किया।
सता के मोह में नीतीश ने फिर शतरंज सजाया।
अगले काल मे सता बचाने लालू से जोड़ा नाता।
शासन हथियाकर प्रशांत उत्तराधिकारी बनाया।

बीजेपी के चक्कर मे गठबंधन से नाता तोड़ दिया।
मिल बीजेपी के संग फिर सता से नाता जोड़ दिया।
प्रशांत ने बीजेपी के बारे में नीतीश को समझाया।
बीजेपी के प्यार में प्रशांत को भी वनवास भगाया।

इतिहास पुनरावृत्त अमरफल जो बीजेपी को दिया।
बीजेपी ने नए प्रेमी चिराग को अमरफल दे दिया।
गठबंधन सत्ता तोड़ नीतीश ने समीकरण बनाया ।
पर बीजेपी की चाल पे चिराग के रंग से चकराया।

गाय जब दूध देना ही बंद करे और बूढ़ी हो जाय।
गोरक्षक ही क्या उसे कसाई के हवाले कर आये।
अब क्या हो सकता जब चिडिया चुग गयी खेत।
अफसोस प्रशांत जाने का वैराग्य असर दिखाये।

नितीश ने खुद को वनवास के मुहाने पर पहुंचाया।
दे राजपाट भतीजे को अब सन्यास का मन बनाया।
****

26. बिहार राज्य के चिराग

डेमोक्रेसी के दंगल में चिराग तो चिराग है।
चिराग तो हनुमान है सीना चिर दिखायेगा।

चिराग जहाँ रहेगा वहीं तो रौशनी लुटाएगा।
किसी चिराग़ का अपना मकान नहीं होता।

कई चिराग माइग्रेंट हुए कई ने पलायन किया।
कोरोना ने सरकार की कलाई को खोल दिया।

किसी घर रोशन किया किसी का जला दिया।
कोई कहे घर को आग लग गई घर के चिराग़ से।

चिराग शेर का बच्चा जंगल चिरकर जाएगा।
वो तो कहीं से किसी के लिए जीत ले आएगा।

रात को जीत तो पाता नहीं लेकिन ये चिराग़।
कम से कम रात का नुक़सान बहुत करता है।

चिराग ख़ामोश लेकिन किसीका दिल जलता है।
जेडीयू के दिल जल उठे तो दोष चिराग का नही।

बिहार राज्य के चिरागो में तेल अगर कम था।
तो क्यूँ गिला फिर नीतीशकुमार हवा से रहे।
****

27. आर्थिक आजादी

नोटबन्दी का दर्द सीने मे छुपाये खुश होते रहे।
लग रहा था आज ऊंट पहाड़ के नीचे आये है।
मिलेगे लाइनों में अपने को धनकुबेर कहते है।
पर घरोंदे मिट्टी के हो तो कहाँ कभी टिकते है।

लगने लगा था कि अब मंजिल दूर नही बस।
चंद कदमो पर खुशहाली बाहें फैलाये खड़ी है।
आंतकवाद पत्थरबाज़ी और कालाधन मुक्त।
नए भारत का एक आगाश बस होने वाला है।

बजे नगाडे रात बारह बजे तब किसे पता था।
हर कोई आर्थिक आजादी के इंतज़ार में था।
समय ने ऐसा सिला दिया सपनो पर वार किया।
छोटे रोज़गारो पर एक बड़ा कुठाराघात किया।

खुशी मना ना पाए अमेरिकन दोस्त आने की।
दस्तक दे दी आंगन में, आ खड़ी हुई महामारी।
किसी की खुशी को कौन यहाँ बरदाश्त कर पाए।
ताकतवर दोस्ती में,हम दुश्मन की सौगात पाए।

अब जब कभी अच्छे दिन के सपने आते है।
एक सिहरन ऐसी कि अंदर तक कांप जाते है।
दिल के अंतराल से एक ही आवाज़ उठती है।
बहुत हुआ हे भगवान, लौटा दे वो पुराने साल।
****

28. महिमा

कहत सुनत सब दिन गए, उरझी न सुरझ्या मन।
कहि कबीर
चेत्या नहीं, अजहूँ सो पहला दिन॥

कहत सुनत सब दिन बीते, मन सुलझ ना पाय!
कहि कबीर -
मन होश आया नहीं,अवस्था पहले जैसी भई।

जमीन तो गयी अर्थव्यवस्था भी डूबत चली।
कहि कबीर -
चेत्या नहीं, अजहूँ सो पहला दिन॥

कहत रहे मन की बात, लोग समझ न पाय।
कहि कबीर -
कहत सुनत सब दिन गए, उरझी न सुरझ्या मन।

अजब फकीरी लाग रही, झोला उठा चले जाएंगे।
कहि कबीर -
घर जो फुके आपना, चले हमारी साथ।

गुरु के शीश पैर धर, चेला आगे बढ़ जाय।
कहि कबीर -
बलिहारी गुरु आपने, गोविंद दियो बताय।

गरीब घर जन्म लिया दौलत मिलगी आय।
कहि कबीर -
आशा तृष्णा ना मरी, मर मर गया शरीर।

सतर वर्ष कुछ हुआ नही, अब एक एक बेचत भये।
कहि कबीर -
पंथी को छाया नहीं फल लागे अति दूर|

दौलत दोस्तो में बाँट दी, सारी मन लगाय।
कहि कबीर -
शीश चढ़ाए पोटली जात ना देख्यो कोय।

नीति बात करत रहे, नियत बीच आ जाय।
कहि कबीर -
कबीर थोड़ा जीवना, मांड़े बहुत मंड़ाण।

अंधा बांटे रेवड़ी फिर फिर अपनो को देय।
कहि कबीर -
इक दिन ऐसा होइगा, सब सूं पड़े बिछोह।

अखबार मीडिया मिल,महिमा बखाने हर कोय।
कहि कबीर -
सात समुद्र मसि करूँ, तव गुण लिखा न जाय।

सीना छपन इंच का, विपक्ष अब डराते भये।
न कहि कबीर -
निंदक नियेरे न राखिये, आँगन कुटी छवायें|
****

29. एक घरवाली एक बाहरवाली

बीजी जीडी के गठबन्धन का ऐलान हुआ।
तब लिजी बिगड़ी प्रेमिका सी बिदक गयीं।
लिजी जब कूद पड़ी इस महाभारत में तो
जीडी को बर्बाद करने की कसम खा गयी।

बिजी ने बहुत उसे समझाया और मनाया।
लिजी को तो ना मानना था नही वो मानी।
कसम रब की ये रिश्ते तो रूहानी होते है।
बिजी ही शोहर मेरा, कसम उसने तो खायी।

प्रेमिका सड़क पर जब, जीडी के सामने आई।
बीवी के देखकर वो गुर्राई और फिर चिल्लाई।
यह देख बीवी को बात सब समझ में आयी।
उसने जमकर शोहर की क्लास तब लगाई।

जीडी ने बिजी से पहले थोड़ा प्यार जताया।
फिर उसने सोहर को अपनी लाइन पर लाया।
लिजी से रिश्ता बोल,क्या तेरी वो लगती है
क्यों हर समय वो कसमे तेरी ही खाती है।

जन्मो का तुझसे नाता, ऐसा वो बतलाती है।
अपने को तो वो बस बीवी तेरी ही बताती है।
मुझको सरेआम ललकारने वो आ जाती है।
अलग करेगी हमको ऐसी कसम वो खाती है।

शोहर जरा हकबकाया फिर सकपकाया।
बीवी से अपनी कसमो को उसने दोहराया।
डार्लिंग लिजी से मेरा कोई नाता नही।
सरेआम तेरे प्यार का मैं इजहार करता हूँ।

जीडी जब गुर्राई और बिजी पर खिसयाई।

बिजी ने प्यार की कसम जीडी की खाई।
बोला डार्लिंग हमारे संबंध सदियों पुराने है।
लिजी से कोई रिश्ता मेरा, ये में नकारता हूं।

सबके बीच लेकिन लिजी बोल ही जाती है।
कोई कुछ भी बोले ये घोषणा करती हूँ।
बिजी से तो जन्म जन्म का रिश्ता है मेरा।
जीडी से तो पुश्तेनी दुश्मनी का नाता है।

अंजाम ए आलम क्या होता है जब
बीबी का सामना प्रेमिका से होता है।
क्या करेगा सोहर बेचारा उसे तो बस।
एक खाई दूसरा कुआ नजर आता है।

लेकिन वाह रे आलम, राजनीति में मगर
हमेशा एक और एक ग्यारह नही होता है।
हमारी गणित में अपवाद नही होते मगर
राजनीति में तो गणित भी बदल जाती है।
****

30.नया लोकतंत्र

नवयुग आया कुछ इस तरह
दबे पांव चुपके चुपके
एक अजीब अहसास था
अच्छे दिन वाला साज था

ना कुछ करने का साहस था
ना कह पाने का एहसास था
अधूरी आकांक्षा का बवंडर लिए
ना कुछ कर गुजरने का भान था

एक अजीब दौर आया ऐसा
बहा गया वो जीवन की नाव
देखता रहा साहिल बेबस सा
न बचा पाया बवंडर से आज

भक्त समूह का हिस्सा बनकर
बैठा रहा दालान सजाकर
था इंतजार कुछ हो जाने का
सपना अच्छे दिन आने का

ख्याल नही आया बचाने का
तूफान सब बहा ले गया पर
बचा जो रखा था सालो से
लग गया काम इस मुहाने पर

बजाकर ताली और थाली
दिए भी जल उठे चौबारे में
की प्रशंसा हर घड़ी हर पल
बैठ कर खाता रहा खुशी में।

अजीब नशा था जमाने मे

थी शान अजीब आशियाने में
न गम धंधे चोपट होने जाने में
न अफसोस नौकरी गुमाने में।

सपनो में जीता है रहा बस
अच्छे दिन आने वाले है ।
उम्मीद में जी रहा था बस
अच्छे दिन के सपने सजाये।

दुआ सलाम डर सबब था
दिल कोने में डर की चिंगारी
कब धधक उठी घर जलाने को
आहटअच्छे दिन के सपने वाली।

पड़ोस से पडोस ही डर गया
भाईचारा बवंडर निगल गया
साहस नही कर पाया यहाँ
गलत को गलत कह पाने का ।

डरता गया बस अपने साये से
जो परछाई से था बना हुआ
जिया एहसास लोकतंत्र का
जहां वो हलाल हर रोज हुआ।
****

31. रावण आज भी जिंदा है

कभी वोह एक राजा था जीता था महलो में।
आज वो जी रहा है, हर आदमी के दिलो में।
नजर आता है विश्व की महानतम सभ्यता में
रावण आज जिंदा हर आदमी के ख्वाबों में।

मार नही सकते इसे मनाते खुशिया जलाने में।
जानेंगे कब नही बसती जान बेजान पुतलो में।
हम संभाल कर रखते जतन से अपने दिलो में।
और मिलकर जिंदा रखते गाँव और शहरो में।

अहंकार है हर दिल का झाँककर देखे दिल में।
मरने नही देते इसे चूर होकर सत्ता के नशे में।
नही मर सकता कभी यह मानवता का दुश्मन।
बसता है दिल मे हर गली नुक्कड़ हर शहर में।

इंसान इंसान को दुश्मन बनाते अपने फायदे में।
भावनाओ को कुरेदते आते रावण की शक्ल में।
क्या फर्क पड़ता जातिवाद धर्मवाद नस्लवाद में।
समाज में बोएंगे जहर, किसी वाद की शक्ल में।

मसाल पकड़वा आग लगवायेगा अपने घरो में।
कंधों पर चढ़ शासित करेगा अपने अहंकार में।
लड़ते मरते इंसानो के बीच फर्क को तलाशेगा।
ऐसा नही हुआ तो फिर रावण कैसे जिंदा रहेगा।

कौन कहता ट्रम्प हार गया वो हार सकता नही।
फिस्सडी नही जब 48 फीसदी जनता है साथ मे।
रहेंगे रावण का मुखोटा लगाकर हम अहंकार में।
हवा देते रहेंगे अपने विचार को ट्रम्प के साथ में।

जहां नस्लवाद नही होगा ये आएगा जातिवाद में।

ये भी नही हुआ तो इज़ाद होगा और कोई वाद में।
रावण का जीना सार्थक है अगर सत्ता भोगने में।
सारी कायनात निकल पड़ेगी उसे सत्ता दिलाने में।

आओ मिलकर कुछ करे इस चिंगारी को हवा दे।
और शोला बना दे और बदल दे इसे दावानल में ।
पहुंच न जाए ये आग घर गली शहर के मुहाने में।
अपने ही घर को स्वाहा करे ऐसा महान यज्ञ करे।

कर दे ये जीवन अपना हर उसी रावण के नाम।
जो जिए सत्ता पाने के लालच और अहंकार में।
वो अपने सपनो का संसार बसाकर यहां जीता रहे।
हम खुश हो जाये की रावण बसता हमारे दिलो में।
****

32. फोबिया

किससे किसको डरना हे। कौन किससे डरता है।
वातावरण में तो चारो और डर ही डर पनपता है।

कौन है डर के सौदागर। कौन इसे पैदा करते है ।
किससे ये ताकत पाते है। कौन पोषित करते है।

कहीं इस्लामोफोबिया। कही हिन्दू आतंकवाद है।
कहीं नस्लवाद है।कौन नए शब्द ईजाद करता है।

यह फोबिया किसे मारेगा। इसका पेट नही भरता है।
महत्वकांक्षा के नंगे नाच में, ये अपनों को डराता है।

भूलते सत्ता के खेल में। डर इंसान के अंदर बसता है।
कब निकलकर आता है। डरानेवाले को खा जाता है।

क्यो नही जानवर पैदा करे। उनसे डरे उनको डराए।
वे हथियार नही उठाते है। पेट भरने पर चले जाते है।

जानवरो का डर खत्म करने कभी समाज बनाये थे।
आज समाज में इंसान को इंसान से ही डरा रहे है।

इसी लोकतंत्र से पैदा हो,सता की शह में पनपते है।
ट्रम्प पुतिन या हो जंग,लोकतंत्र के नाम पर जीते है।

ये सता के नशे में चूर।लोकतंत्र में राजा बन जाते है।
कभी भगवान से डरते।आज उसी के नाम से डराते है।

करेंगें नही जनता के लिए। तो भी जनता आस करेगी।
कभी तो लोकतंत्र आएगा। जो जनता के लिए जीयेगा।
****

33. नेताजी सुनिए

चुनावो का जैसे ही बिहार में ऐलान हुआ ।
श्राद पक्ष में जैसे कौओ का आवाहन हुआ।
सवा लाख करोड़ पैकेज आते आते रह गया।
मिट्टी डालो पिछली बाते अब ये ऐलान सुनो।

300 आतंकवादी अब राज्य में घुसने वाला है ।
सुरक्षा देंगे हम अब जीवन सारा हमारे नाम करो।
10 लाख नौकरी , पंद्रह सौ खाते में आ जाएगा।
20 लाख अवसर 5% डीसकाउन्ट में मिल जाएगा।

बस करो नेताजी इन तिलों में तेल नही बचा।
जो था घर मे दाना पानी सब आपकी भेंट चढ़ा।
हवाई चपल से सैर अब सपना नही आता है।
ना तन पर वस्त्र है ना पेट मे दाना ही जाता है।

हमारे पैसे के चौकीदार बन आप हमें समझाएँगे।
कोरोना वैक्सीन आप हमे फ्री में ही दिलवाएंगे।
न पहुंचता जनता का दर्द आपके इन कानो तक।
आवाज आती हर कोने से, ना बची आपमें समझ।

अब खुदा के वास्ते हमे अपने हाल पर छोड़ दो।
आप तो अलकायदा आई एस से नाता जोड़ दो।
डराना बंद करो अब और नफरत आतंकवाद से।
अब आतंक का डर भी हमे छोटा लगने लगा है।

आतंकी तो एक बार में लूटकर चला तो जाता है।
आपकी लूट को तो हमे पांच वर्ष झेलना होता है।
बहन बेटियां, परिवार सब आप से बचाना होता है।
अब तो आप मे हमे एक आतंकी नजर आता है।

हर आंख में सपने नही, हर हाथ काम अब चाहिए।
कोसते रहो चीन को, हर देश हमारा माल चाहिए।
देश की तकदीर नफरत झगड़ो से नही लिखी जाती।
प्रगति बाहर कमाकर, देश समृद्ध करने में होती है।

मेहर करो जनता पर अब तो हार जाओ आप बस।
हम देंगे एक बिएमडबलु और मंगल पर प्लाट फ्री।
सस्ता रहेगा यह सौदा यह फिर भी जनता के लिए।
वर्ना डकार जाएँगे आप, अब खेत खलियान भी।

****

34. गुनाह

धोनी की छह साल की बच्ची के लिए धमकी,
कांप जाना था कलेजा, आप अगर जिंदा है।
अफसोस उसे नही, आपको करना ही होगा।
सेलेब्रिटी नही,हर इंसान इसकी जद मे जो है।

आग उनके घरों तक पहुंच जाए अगर
बस्ती की आग से जो बेखबर रहते है।
गुनाहगार आग लगानेवाले तो है ही पर
ना सम्भलना उनका गुनाह भी तो है।

आप गुनाह से आँचल कब तक बचा पाएंगे।
फैलती मानसिक विकृतता के शिकार जो है।
जागो ड्राइंग रूम से झांककर देखने वालो।
गुनाहगार आप नही,आपकी चुप्पी भी तो है।
****

35. एक श्रधांजलि और

तकाजा था समय का और एक श्रधांजलि का
ढूंढे रहे मगर एक निर्भया से दूसरी का सफर।

बह गया पानी गंगा में दो हजार बारह से अबतक।
अम्बार लग गया एक निर्भय से दूसरी आने तक।
एक पहाड़ खड़ा हो गया ढ़ाई लाख का मगर ।
जीते रहे सोते रहे हम बेरहमी की चादर ओढ़कर।

खुदगर्ज जमाने में राजनैतिक आतंक साये में।
दुभर हो गया निर्भया का सांस लेना जमाने मे।
जीते रहे मगर क्या जी पाए हम इन लहमो को
इन सलाखो के पीछे और इन संगीनों के साये में

एक निर्भया वोह थी और एक निर्भय ये थी।
एक थी मनमोहन राज में एक थी मोदी काल मे।
एक को मिली सन्मान की सुविधा इलाज विदेश में।
एक दम तोड़ गयी सन्मानित इलाज के अभाव में।

एक के सन्मान में प्रधाम मंत्री थे एयरपोर्ट पर।
एक तरसती रही प्रधान मंत्री के एक ट्वीट को।
एक दाहसंस्कार हुआ मुख्यमंत्री की मौजूदगी में।
एक तरसती रही अपने ही जन्मदाता स्वजनों को।

खुदा के लिए ना कहना ये नही वो नही तो कौन।
क्या बराबरी करे संवेदनहीनता की सीमा लांघ गए।
जब नही कोई हिन्दू मुस्लिम ना कोई दलित था।
अब भारतीय से पहले हिन्दू मुस्लिम दलित हो गए।

डर डरकर जीना ही नियति है यहां हर निर्भया की।
जियेगी नही और सन्मान की मौत नसीब होगी नही।
विडंबना दिशाभ्रम की कहाँ से कहाँ जा रही दुनिया।
किसे खबर इकीसवीं शदी से उनीसवीं आनेवाली है।

36. समाज की उम्मीद

निर्भया की लड़ाई के बाद, समाज मे क्या कुछ बदला।
राजनैतिक पार्टिया बदली, पर समाज तो नही बदला।
सिस्टम तो वही चलता रहा, तो फिर क्या यहां बदला।
कठोर कानून से मगर, जुर्म का अंदाज़ तो नही बदला।

राजनैतिक महत्वाकांक्षा ही क्या, समाज मे सब कुछ है।
हर लड़ाई का हश्र भी क्या, जनता का बस सड़क ही है।
क्यो नही संसद में बैठकर,सांसद कुछ और सोच पाते है।
कानून बनने से ही बस, क्या अपराध खत्म हो जाते है।

वक्त वोह भी सपने सा ही तो,इस समाज में आया था।
सोच थी क्यो सभ्य समाज मे,फांसी जैसी कोई सजा हो।
काश बदल पाते समाज मे, सोच सजा और अपराध की।
अपराधी की जान लेने का, क्यो किसी को अधिकार हो।

संसद से ढूंढ लेते अगर, अपराध क्यो यहां पनप जाते है।
अपराधी किसके सरंक्षण में, यहां खुलेआम घूमते जाते है।
आवाज़ उठे जब समाज में तो,संसद में बैठकर आप बस।
अपराध नही,अपराधी खत्म करने का क्यो सोच पाते है।

क्यो नही आपका सिस्टम, अपराधी को बदल ही पाता है।
सजा बढ़ाने से ही समाज मे,कहीं जुर्म खत्म हो जाता है।
क्या संसद देश की जनता को,इंसाफ कभी भी दे पाएगी।
या एक मोमबत्ती जलाकर बस, जनता सहज हो जाएगी।

क्यो ।क्यो । हर बार ही क्यो, आप सोते रहोंगे कब तक।
संसद से हल ना मिले अगर,तब आप आगे नही आओगे।
अपराधी समाज के कहीं, आप जैसे बुद्धिजीवी तो नही।
बलात्कार यहां होते रहे,आप चुप्पी लगा बैठे रह जाओगे।
****

37. रंगमंच

ए यार मेरे, ऐसा रोल में क्या कर दिया तूने।
अपने आप को यहाँ शहशांह ही समझ बैठा।

था अभिनय का नशा कुछ ऐसा तूझ पर।
निकला नही मगर, राजा हरिश्चन्द्र बन बैठा।

रहेगा तू तो अपने गरूर में, मगर ऐ दोस्त मेरे।
जमाना कहाँ ही तेरी असलियत को भूला पाया।

संसार रंगमंच है, सजी कठपुतलियां यहाँ कईं।
पर कौन कहाँ कोई यहाँ,महाराजा ही रह पाया।
****

38. एक जज का दर्द

(प्रशांत पर कोर्ट की अवमानना के केस में कारवाही जारी है।)

कोर्ट : प्रशांत ने कोर्ट की तौहीन की। क्या उनको अपना जुर्म कबूल है ?

वकील : मेरा मुवकिल बेकसूर है । उसने जो देखा वो ही लिखा।

कोर्ट : पर इससे कोर्ट की बदनामी हुई।

दवे : प्रशांत ने जो लिखा वो कोर्ट पर नही, परन्तु जज पर था ।

दवे : आपको राज्यसभा सीट और जेड प्लस सुरक्षा मिलती है... यह क्या छाप छोड़ती है?... राफेल फैसला, अयोध्या फैसला, सीबीआई फैसला। आप ये निर्णय देते हैं और ये लाभ हैं। ये सभी गंभीर मुद्‌दे हैं जो न्यायपालिका के मूल में हैं।"

दवे : केवल कुछ न्यायाधीशों को राजनीतिक रूप से संवेदनशील मामले क्यों मिलते हैं? उदाहरण के लिए जस्टिस नरीमन - उन्हें ऐसे मामले कभी नहीं सौंपे जाते है ।

दवे : देश की 130 करोड़ आबादी के प्रति अपनी जिम्मेदारी के बारे में याद दिलाता हु। आप 130 करोड़ भारतीयों के माता-पिता हैं। हम अपने देश के राजनेताओं को जानते हैं। नागरिकों के अधिकारों को बनाए रखना सर्वोच्च न्यायालय का कर्म और धर्म है।"

दवे : आप एफिडेविट पढ़े और उसमे लिखे तथ्यों को नोट करे।

कोर्ट : इसकी जरूरत नही। कोर्ट की बदनामी तो हुई । आप कसूरवार है ।

अटॉर्नी : उसने जो कहा, वो गुनाह नही, आप सजा न करे।

कोर्ट : नही, हम फैक्ट्स नही देखना चाहते। कोर्ट की बदनामी हुई है।

कोर्ट : अगली तारीख सजा के लिए मुकर्रर की जाती है।

{20 अगस्त- सजा को लेकर बहस के दौरान}

प्रशांत : सजा पर बहस स्थगित करे । समीक्षा याचिका दायर होने और फैसला होने तक सजा पर सुनवाई टाल दी जाए।

कोर्ट: भूषण द्वारा किए गए भयावह / दुर्भावनापूर्ण हमले न केवल एक या दो न्यायाधीशों बल्कि पिछले छह वर्षों के अपने कामकाज में पूरे कोर्ट के खिलाफ हैं। । इस तरह के हमले से इस अदालत के अधिकार के लिए असहमति और अनादर पैदा होता है, इसे नजरअंदाज नहीं किया जा सकता है। ”

कोर्ट : माफी मांगने से इनकार करने के अपने 'अशिष्ट बयान' पर पुनर्विचार करने के लिए अवमानना का दोषी प्रशांत को दो दिन की मोहलत दी जाती है। "सौ अच्छी चीजें करने से एक व्यक्ति को दस अपराध करने का लाइसेंस नहीं मिल सकता है,"

भूषण : मै दंड के लिए खुशी से तैयार हूं।

कोर्ट : लेकिन हम 2 दिन की मोहलत देते है। सोच लो।

भूषण : आप कोर्ट का और मेरा वक्त खराब न करे । मुझे सजा मंजूर है।

कोर्ट : नही। आप दो दिन बाद सोच कर बताओ।

भूषण : ठीक है । अपने वकीलों से सलाह लेकर और कोर्ट के सुझाव पर विचार करूँगा। परंतु माफी नही मांगूंगा।

{25 अगस्त - सजा पर बहस के दौरान}

राजीव : माफी के बदले मुवकिल का बयान पढ़ने की इजाज़त दे

जस्टिस : नही, हम पढ़ चुके हैं , वो माफी क्यों नही मांग रहै। फिर अदालत की तौहीन कर रहे है।
क्या किया जाए, हम अटॉर्नी से सुनना चाहते हैं।

अटॉर्नी: प्रशांत को मामले में सजा न दी जाए। भविष्य के लिए चेतावनी देकर छोड़ा जाए। कई रिटायर और सीटिंग जज ने भी जूडिशियरी में करप्शन के मामले पर बोला था।

जज : आप तो सजा के बारे में बताइये ।

अटॉर्नी : चेतावनी दी जाए और कहा जाए कि भविष्य में ऐसा दोबारा न करें।

जज : लेकिन वो माफी नहीं मांग रहै। कई लोग गलती करते हैं। कई बार बोनाफाईड मिस्टेक भी होता है और वह समझता है कि गलती नहीं की है। उन्हें माफी मांगने में क्या प्रॉब्लम है।

अटॉर्नी : उन्होंने कई बड़े काम किए हैं कई बड़े मामले लेकर कोर्ट के सामने आए हैं। एक व्यापक मत लिया जाना चाहिए और उन्हें छोड़ा जाना चाहिए।

जज : जब वह मानने को तैयार नहीं है कि उसने गलती की है तो कैसे माफ किया जाए। कैसे सलाह दी जाए कि वह दोबारा ऐसी गलती न करें।

जज : एक बार अटॉर्नी ने भी उनके खिलाफ कंटेप्ट का केस किया था । जब उन्होंने खेद जताया था तो केस वापस लिया गया था। इस बार खेद जताने में क्या तकलीफ है।

अटॉर्नी : लेकिन कोर्ट की बड़ी मेहरबानी होगी कि वह प्रशांत को इस मामले में छोड़ दें। कोर्ट को उदार रवैया अपनाना चाहिए।

जज : उन्होंने कई फैसलों पर टिप्पणियां कीं। राम जन्मभूमि पर फैसला देने वाले जज पर भी टिप्पणी की।

अटॉर्नी : उनके जवाब पर विचार न किया जाए। उसे रेकॉर्ड पर न लिया जाए।

जज : कैसे विचार नहीं किया जाए। बाद का बयान तो और भी ज्यादा आपत्तिजनक है। बयान रेकॉर्ड पर नहीं लिया तो हमारी आलोचना होगी। बयान हटाएंगे तो हमे बदनाम किया जाएगा।

अटॉर्नी : 2009 के मामले में भी प्रशांत ने खेद जताया था और यहां भी उसके लिए कहा जा सकता है।

जज : लेकिन उनका जवाब तो पढ़िये। कह रहे हैं कि सुप्रीम कोर्ट ध्वस्त हो चुका है। क्या ये आपत्तिनजक नहीं है?

अटॉर्नी : सुप्रीम कोर्ट ने हाशिये पर जो लोग हैं, उनके लिए काफी कुछ किया है। इस मामले में खेद जताने दिया जाए।

जज : माफी के लिए भी तीन दिन का वक्त दिया। लेकिन उन्होंने बचाव में क्या कहा देखिये।

अटॉर्नी : उन्हें खेद जताने के लिए कहा जा सकता है। अदालत को स्टेट्समैनशिप दिखाना चाहिए। मामले में कंटेप्ट के अधिकार का इस्तेमाल नहीं करना चाहिए। उनके हलफनामे पर ऐक्शन नहीं लेना चाहिए।

जज : जवाब वापस क्यों नही लेते।

अटॉर्नी : ठीक है जवाब वापस लेना चाहिए। खेद जताने के लिए कहा जाए।

राजीव वकील : ऐसा केस नहीं है कि उन्हें सजा दी जाए।
1)प्रशांत को कोर्ट के प्रति ड्यूटी पता है। 1031 आर्टिकल लिखे और 900 कोर्ट के बारे में लिखा लेकिन क्या वह सब कोर्ट को बदनाम करने के लिए था?
2) आपके कंधे पर व्यापक दायित्व है। अदालत का कंधा महान होता है।
3) आपने अपने आदेश में कहा था कि अगर माफी मांगना है तो दो दिन का वक्त दिया जाता है। क्या ऐसा आदेश पारित हो सकता है। ये जूरिस्प्रूडेंस के हिसाब से गलत है।
4)प्रशांत के जवाब को समग्रता से पढ़ा जाना चाहिए। पूरे ट्वीट को एक साथ देखा जाना चाहिए।
5) जब कोई संस्थान के प्रति चिंतित होता है और उसकी बेहतरी चाहता है तभी वह आलोचना करता है।
6)कोर्ट आलोचना से इम्यून नहीं है हमारी ड्यूटी है कि सकारात्मक आलोचना करें।
7) सुप्रीम कोर्ट के कई रिटायर जस्टिस ने भी प्रशांत के बयान के समान बयान दिया है तो क्या सबके खिलाफ कंटेप्ट केस होगा? 8) कई बार हम गलत नहीं होते बल्कि गलत समझा जाता है। जजमेंट को वापस लिया जाना चाहिए।
9) आप ये कैसे कह सकते हैं कि
दोबारा न करें, क्या दोबारा न करें और

कैसे भविष्य में चुप रहने के लिए कहा जा सकता है।
कोर्ट को स्टेट्समैनशिप दिखाना चाहिए।

जज : अगर हम सजा देना चाहें तो क्या सजा दें?

राजीव : उन्होंने कोई मर्डर या चोरी नहीं की है लिहाजा आपसे आग्रह है कि सजा देकर शहीद न करें। कल्याण सिंह को कंटेप्ट में सजा दी गई तो सेलिब्रेट किया गया। विवाद को विराम दिया जाना चाहिए।

जज : प्रशांत ने मामले में जो जवाब दिया है वह दुखदाई है। ऑफिसर ऑफ कोर्ट और राजनीतिक लोगों में फर्क है। मैं प्रशांत की बात नहीं कर रहा लेकिन पब्लिक में किस तरह से कॉमेंट होता है। विचाराधीन केस में कॉमेंट किया जाता है।

केस दाखिल करने के बाद मीडिया में सुनवाई से पहले बयानबाजी शुरू हो जाती है।

अगर हम एक दूसरे को ध्वस्त करेंगे तो कौन इस संस्थान पर विश्वास करेगा। जज प्रेस में अपने बचाव में नहीं जा सकते हैं।

हम सिर्फ जजमेंट लिख सकते हैं। मैं रिटायर होने वाला हूं लेकिन मुझे दुख है कि इस तरह के मामले मुझे देखने पड़े।

अटॉर्नी : जो ट्वीट हैं और जो आरोप है उसकी सत्यता की जांच के बगैर उस ट्वीट पर किसी को सजा कैसे दी जा सकती है?

जज : जज की निंदा होती है। परिवार पीड़ा से गुजरता है लेकिन कोई बोल नहीं सकता। हम भी बार से ही आए हैं लेकिन सिस्टम कब तक सफर करेगा। माफी में गलत क्या है क्या यह शब्द इतना बुरा है। अगर किसी को पीड़ा हुई है तो माफी में गलत क्या है। आपने महात्मा गांधी को कोट किया लेकिन माफी में गलत क्या है।

कोर्ट : बहरहाल कोर्ट फैसला सुरक्षित करती है।
****